राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर, देवप्रयाग, के शिलान्यास कार्यक्रम हेतु माननीय राज्यपाल डॉ0 कृष्ण कांत पाल का उद्‌बोधन। (06/05/2017)

.....

दो पवित्र नदियों– अलकनंदा और भागीरथी के संगम के समीप वर्तमान राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के नव प्रतिष्ठित श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर के भवन और स्टेडियम का शिलान्यास कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता और गौरव की अनुभूति हो रही है। पांच प्रयागों के प्रथम और प्रमुख देवप्रयाग में स्थित संस्थान के इस परिसर का न केवल उत्तराखंड, बल्कि देश–दुनिया में अलग ही महत्त्व होगा। आने वाले कुछ ही वर्षों में देवप्रयाग की पहचान इस संस्थान के नाम से होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। श्री रघुनाथ जी के अत्यंत प्राचीन मंदिर के निकट स्थित यह संस्थान इस देवभूमि में संस्कृत–शिक्षा के संरक्षण और प्रचार–प्रसार का श्रेष्ठ माध्यम बनेगा। यह उत्तराखण्ड की प्रतिभाओं को निखारने के साथ ही प्रतिभा–पलायन में भी कुछ सीमा तक रोक लगाने में मददगार साबित होगा।

संस्कृत भारतीय सभ्यता की मूल भाषा है। दो हजार साल से यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग रही है। हमारा समस्त प्राचीन साहित्य और काव्य संस्कृत में ही है। खुशी की बात है कि रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग हमारी सभ्यता और हमारी संस्कृति को और मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारत की प्राचीन विद्याओं ने दुनिया को बहुत कुछ दिया है। वास्तव में हमारा अतीत बेहद समृद्ध रहा है। वैदिक गणित से लेकर व्याकरण और साहित्य से लेकर भाषा–विज्ञान तक का रिश्ता हमारे प्राचीन ज्ञान के साथ जुड़ा है। चिकित्सा विज्ञान के रूप में आयुर्वेद का वैदिक काल से ही प्रचार था। आयुर्वेद से जुड़े ग्रन्थ जैसे– चरकसंहिता, सुश्रुत संहिता, घेरंड संहिता आदि प्राचीन भारतीय ज्ञान की महान् वैज्ञानिक धरोहर हैं। भारत की तुलना में दुनिया के देश बहुत बाद में इन विषयों से परिचित हुए। तक्षशिला और नालन्दा उस समय के दुनिया भर के विद्यार्थियों के आकर्षण का केन्द्र थे। यह भी विवरण मिलता है कि चीन के शोद्यार्थी भारत के महान विश्वविद्यालय नालन्दा में चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई कर रहे थे। यह सभी संस्कृत में थे। आठवी शताब्दी तक संस्कृत ग्रन्थों का अरबी और फारसी में अनुवाद हो चुका था। देखने में यह आया है कि अरबी के चिकित्सा ग्रन्थों की सामग्री मुख्यतौर पर संस्कृत से ही ली गयी है। बाद के वर्षों में आयुर्वेद केवल दक्षिण ऐशिया तक सीमित न रहकर अमेरिका और यूरोप के देशों तक फैला। वेद–वेदांग के अलावा संस्कृत में दर्शन शास्त्र पर भी विशाल साहित्य मौजूद है। इस कड़ी में एक ओर सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा जैसे आस्तिक दर्शन हैं तो दूसरी ओर वेदों को प्रामाणिक न मानने वाले चार्वाक, बौद्ध तथा जैन जैसे दर्शन भी हैं।

संस्कृत का भारतीय संविधान में एक विशेष स्थान है। अनुच्छेद 351 जो हिन्दी भाषा के विकास के बारे में है, उसमें साफ–साफ कहा गया है कि हिन्दी के विकास के लिए आठवी अनुसूची की किसी भी भाषा से शब्द लिये जा सकते हैं परन्तु सर्वप्रथम वरियता संस्कृत को देनी होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि संस्कृत के विकास से ही हिन्दी और अधिक पोषित हो सकती है।

उत्तराखण्ड ही एक ऐसा प्रदेश है जहाँ संस्कृत को एक विशेष दर्जा प्राप्त है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 345 में कहा गया है कि राज्य अपनी राजकीय भाषा निश्चित कर सकता है। इसलिए यह भी एक गौरव की बात है कि उत्तराखण्ड में संस्कृत को उच्च दर्जा प्राप्त है। भारतीय संस्कृति और इतिहास में विशेष रूप से यह वर्णन है कि हिमालय के पहाड़ो में, ऋषि–मुनियों के तपस्या से ज्ञान और जीवन के सत्य की प्राप्ति हुयी, इसलिए यह समझा जा सकता है कि संस्कृत और उत्तराखण्ड का रिश्ता हजारों साल पुराना है जिसको आज एक संवैधानिक रूप दिया गया है।

आजकल के परिवेश में यह सवाल भी जरूर उठेगा कि आखिर संस्कृत क्यों पढ़नी चाहिए। आजकल वैश्वीकरण का दौर है जिससे ज्ञान–विज्ञान में वृद्धि हुयी है और वैश्विक आदान प्रदान से हर एक क्षेत्र में फायदा हुआ है। परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी, टेलीविजन इत्यादि के प्रभाव के कारण जहाँ लाभ हुआ है वहीं हमारे बुनियादी मूल्य कमजोर

हो रहे हैं। आजकल की युवा पीढ़ी जो स्कूल में हैं या कॉलेज में हैं वे इन चीजों से बहुत जल्दी प्रभावित हो जाते हैं । अतः हमारी युवा पीढ़ी भारतीयता के मूल सिद्धान्तों को न भूले अतः युवा पीढ़ी को संस्कृत से जोड़ा जाना परमावश्यक प्रतीत होता हैं। यदि हम भारतीयता के बारे में अपनी पुरानी सभ्यता के बारे में और प्राचीन संस्कृति के बारे में गहराई तक जानना चाहते हैं तो संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो आजकल का युवा वर्ग भारतीय सभ्यता से दूर होता चला जाएगा और हम अपने बुनियादी मूल्यों को भूल जाएंगे। इससे आने वाले समय में देश कमजोर होगा और इससे देश की अखण्डता पर भी प्रभाव पड़ेगा।

बताना चाहूँगा कि दुनिया की अग्रणी वैज्ञानिक संस्था **नासा** ने भी स्वीकार किया कि **''संस्कृत कम्प्यूटर के लिए सबसे मुफीद भाषा है''** जिसमें कम्प्यूटर के समस्त कार्य संचालित किये जा सकते हैं। वहीं विश्व प्रसिद्ध अमेरिकी पत्रिका फोर्ब्स ने कम्प्यूटर में संस्कृत के प्रयोग को लेकर एक लेख प्रकाशित किया था जिसमें उसने लिखा था कि **''कम्प्यूटर को प्रोग्राम करने के लिए संस्कृत सबसे सुविधाजनक भाषा है।''**

आज के परिवेश में संस्कृत में रूचि बढ़ाना आवश्यक है। आम आदमी और स्कूल–कॉलेज के युवा को संस्कृत भाषा की ओर आकर्षित करने हेतु अनुवाद बहुत जरूरी है। रविन्द्रनाथ टैगोर ने गीतांजलि बांग्ला

में लिखी थी और नोबल पुरस्कार तो उन्हें जरूर ही मिलता, हो सकता है कुछ समय लगता लेकिन जब वे भारतवर्ष से इंगलैण्ड जा रहे थे तो समुद्री जहाज पर उन्होंने गीतांजलि का अंग्रेजी में अनुवाद किया लन्दन में उनकी पुस्तक प्रकाशित हुयी और नतीजा यह हुआ कि उसी साल उन्हें नोबेल पुरस्कर मिल गया।

जिस प्रकार उर्दु के मशहूर शायरों की रचनाएँ बाजार में उपलब्ध हैं जिनमें एक पृष्ठ पर उर्दु की शायरी होती है और उसी का हिन्दी अनुवाद उसके बिल्कुल सामने वाले पृष्ठ पर होता है। संस्कृत हेतु यदि कुछ इस प्रकार की पुस्तके उपलब्ध हों तो विशेष रूचि बनेगी और आम आदमी भी उसमें भाग ले सकेगा। परशियन में संस्कृत के पुराने ग्रन्थ के अनुवाद तो लगभग डेढ़ हजार साल से मौजूद हैं लेकिन इंगलैण्ड में सब से पहले विलियम जेम्स ने 1789 में शकुन्तला का संस्कृत से अनुवाद किया जिससे पश्चिमी सभ्यताओं की रूचि संस्कृत में बढ़ी। इसके बाद मैक्स मुलर ने वेदों का अनुवाद पहले जर्मन में तथा बाद में अंग्रेजी में किया। भाषा के प्रसार में अनुवाद का बहुत महत्व है।

भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कल्चर यानी संस्कृति का प्रसार किया जा सकता है। हमारे प्रधानमंत्री जी के प्रयासों से पूरे विश्वभर में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। टाईम्स स्क्वैयर न्यू यॉर्क में जो सब से व्यस्त चौराहा है वहाँ पर भी ट्रैफिक रोक कर योग दिवस मनाया गया। पतंजलि का योगशास्त्र एक मूल ग्रन्थ हैं

जिसमें योग के अलावा और बहुत सी चीजें दी गयी हैं जो भारतीय संस्कृति की जड़ों तक जाने के प्रयास हैं। क्योंकि योग को सम्पूर्ण विश्व में मान्यता प्राप्त हो गयी है अतः संस्कृत के प्रसार के लिए योग को भी एक आवश्यक वाहक बनाया जा सकता है ।

अंत में मैं आचार्य शंकर को स्मरण करता हूँ जो केरल से चलकर उत्तराखण्ड पहुंचे। उन्होंने भारत को सांस्कृतिक रूप से एकसूत्र में बांधा। उन्होंने अद्वैत दर्शन की स्थापना कर मानव को मानव से जोड़ने का अनोखा कार्य किया है। वर्तमान समय में पुनः इस एकता सूत्र को स्थापित करने की आवश्यकता है।

मुझे विश्वास है यह परिसर अपनी इस भूमिका का बखूबी निर्वाह करेगा। मैं इस अवसर पर संस्थान के कुलाधिपति श्री प्रकाश जावडेकर, कुलपति श्री पी0एनं शास्त्री, परिसर के प्राचार्य श्री के0बी0 सुब्बारायडु एवं परिसर के सभी प्राध्यापकों, विद्यार्थियों समेत पूरे स्टाफ को इस पुनीत अवसर पर शुभकामनाएं प्रदान करता हूं और कामना करता हूं कि यह परिसर अपने लक्ष्य में सफल होते हुए देश–विदेशों में अपनी कीर्ति–पताका फहरायें।

धन्यवाद।

जय हिन्द।